

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 7: पुराणों के लक्षण

14 September 2026



सूत गोस्वामी पावन परम्परा की शृंखला आगे बढ़ाते हुए बताते हैं कि गुरु-शिष्य क्रम से अथर्ववेद के मन्त्र किसे प्राप्त हुए, किन मुनियों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुराण-परम्परा को अक्षुण्ण रखा, और वे कौन-से निर्णायक मापदण्ड हैं जो वास्तविक शास्त्र को साधारण कथा से पृथक् करते हैं — वे ही मापदण्ड जिन्हें श्रीमद्भागवत सर्वाधिक पूर्णता से साकार करता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। यह बता चुकने के बाद कि किस प्रकार वेदव्यास ने एक वेद को उसके चार महान् रूपों में विभक्त किया, सूत गोस्वामी अब उस वृत्तान्त को अथर्ववेद की शाखाओं से पूर्ण करते हैं, और फिर वेदों के साथ खड़ी उस पावन वाङ्मय की ओर मुड़ते हैं — पुराणों की ओर। द्वादश स्कन्ध का यह सप्तम अध्याय पहली दृष्टि में नामों की एक सूची-सा प्रतीत हो सकता है; किन्तु इसके भीतर एक शान्त, गहन शिक्षा निहित है — कि दिव्य ज्ञान किस प्रकार सुरक्षित रहता है और क्या वस्तु किसी शास्त्र को सचमुच पुराण बनाती है। सूत उन ऋषियों के नाम लेते हैं जिनके माध्यम से अथर्व-मन्त्र तथा पुराण-संग्रह आगे बढ़ाए गए, और फिर उन दस विशिष्ट लक्षणों को गिनाते हैं जिनसे विद्वान् एक सच्चे पुराण को पहचानते हैं। वे सब अठारह महापुराणों के नाम लेकर समापन करते हैं — जिनमें भागवत भी है। यह अध्याय हमें परम्परा की जीवित शृंखला दिखाता है, और उस सावधान विधान को भी जिससे गहनतम सत्य इस प्रकार गढ़े गए कि प्रत्येक युग उन्हें ग्रहण कर सके।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 7 (सप्तम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: अथर्ववेद की शाखाएँ तथा पुराणों के लक्षण
- मुख्य वक्ता: सूत गोस्वामी (उग्रश्रवा), नैमिषारण्य के ऋषियों को कथा सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: नैमिषारण्य के ऋषिगण, शौनक के नेतृत्व में
- मुख्य स्थान: नैमिषारण्य का वन-आश्रम
- मुख्य विषय-वस्तु: अथर्ववेद की शाखाएँ, पुराणों को सुरक्षित रखने वाले ऋषि, पुराण के दस लक्षण, तथा अठारह पुराणों के नाम
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 7, श्लोक 1-25
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

अथर्ववेद की शाखाएँ

सूत यह वृत्तान्त पुनः आरम्भ करते हैं कि वेद किस प्रकार आगे बढ़ाया गया। अथर्ववेद के आचार्य सुमन्तु ने अपनी संहिता अपने शिष्य कबन्ध को पढ़ाई, जिन्होंने उसे विभक्त करके पथ्य तथा वेददर्श को पढ़ाया। वेददर्श से वह शौक्लायनि, ब्रह्मबलि, मोदोष तथा पिप्पलायनि तक पहुँची; पथ्य से कुमुद, शुनक तथा जाजलि तक। बभ्रु, सैन्धवायन, सावर्ण्य तथा अन्य ऋषियों के माध्यम से — और नक्षत्रकल्प, शान्ति, कश्यप तथा आंगिरस जैसे आचार्यों के माध्यम से — अथर्ववेद के मन्त्र शाखा-दर-शाखा सुरक्षित रखे गए। नामों की इस धैर्यपूर्ण परम्परा में एक सुन्दर सत्य छिपा है: शाश्वत शब्द संयोगवश नहीं, अपितु असंख्य ऋषियों की भक्ति से बचा रहा, जिनमें से प्रत्येक ने एक अंश ग्रहण करके उसे श्रद्धापूर्वक आगे सौंपा।

पुराणों को सुरक्षित रखने वाले ऋषि

तब सूत पुराणों की ओर मुड़ते हैं, वे पावन इतिहास जो वेदों के साथ खड़े हैं। छह महान् आचार्यों ने, वे कहते हैं, पुराणों को सुरक्षित रखा: त्रय्यारुणि, कश्यप, सावर्णि, अकृतव्रण, वैशम्पायन तथा हारीत। प्रत्येक ने एक संग्रह सूत के अपने पिता रोमहर्षण के मुख से सीखा, जो वेदव्यास के शिष्य थे; और स्वयं सूत — उग्रश्रवा — ने भी कश्यप, सावर्णि तथा अकृतव्रण के साथ मूल संग्रह रोमहर्षण से सीखे। यह कथन में एक व्यक्तिगत क्षण है: नैमिषारण्य के ऋषियों के समक्ष बैठे वक्ता स्वयं उस शृंखला की एक जीवित कड़ी हैं जिसका वे वर्णन कर रहे हैं — जिन्होंने पुराण सीधे अपने पिता से पाए, जिन्होंने उन्हें व्यास से पाया।

पुराण के दस लक्षण

अब सूत अध्याय का मर्म उघाड़ते हैं: क्या वस्तु किसी ग्रन्थ को सच्चा पुराण बनाती है। पुराणों के ज्ञाता, वे कहते हैं, दस विशिष्ट लक्षण पहचानते हैं, यद्यपि कुछ आचार्य पाँच गिनते हैं, पुराणों को दस विषयों अथवा पाँच के आधार पर बड़े और छोटे में विभाजित करते हुए।

सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्तिरक्षान्तराणि च ।
 वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः ॥ ९ ॥
 दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः ।
 केचित् पञ्चविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया ॥ १० ॥

*sargo 'syātha visargaś ca vṛtti-rakṣāntarāṇi ca vaṁśo vaṁśānucaritaṁ saṁsthā hetur apāśrayaḥ
 daśabhir lakṣaṇair yuktaṁ purāṇaṁ tad-vido viduḥ kecit pañca-vidhaṁ brahman mahad-alpa-
 vyavasthaya*

अर्थ: सर्ग (सृष्टि), विसर्ग (गौण सृष्टि), वृत्ति (पालन), रक्षा (रक्षण), मन्वन्तर, वंश (राजवंश), वंशानुचरित (उनके चरित), संस्था (प्रलय), हेतु (कारण), तथा अपाश्रय (परम आश्रय) — पुराणों के ज्ञाता इन्हीं दस लक्षणों से एक पुराण को पहचानते हैं, यद्यपि कुछ, हे ब्राह्मण, पाँच गिनते हैं, बड़े को छोटे से पृथक् करते हुए। (स्कन्ध 12, अध्याय 7, श्लोक 9-10)



सूत उन दस लक्षणों के नाम लेते हैं जिनसे विद्वान् एक सच्चे पुराण को पहचानते हैं — सृष्टि से लेकर परम आश्रय ब्रह्म तक, जो सबके नीचे विद्यमान है (श्लोक 9-10)।

तब सूत प्रत्येक लक्षण की व्याख्या करते हैं। सर्ग आदि-सृष्टि है — अव्यक्त प्रकृति से महत्तत्त्व, अहंकार, सूक्ष्म तत्त्वों, इन्द्रियों तथा उनके विषयों का उद्भव। विसर्ग चर-अचर प्राणियों की गौण सृष्टि है, जो पूर्व-कर्म के संस्कारों के अधीन बीज से बीज उन्मीलित होती है। वृत्ति वह साधन है जिससे प्राणी पोषित होते हैं। रक्षा प्रत्येक युग में भगवान् के अवतारों द्वारा जगत् का रक्षण है।

रक्षाच्युतावतारेहा विश्वस्यानु युगे युगे ।
 तिर्यङ्मर्त्यर्षिदेवेषु हन्यन्ते यैस्त्रयीद्विषः ॥ १४ ॥

rakṣācyutāvatārehā viśvasyānu yuge yuge tiryāṇi-martyarṣi-deveṣu hanyante yais trayī-dviṣaḥ

अर्थ: रक्षा अच्युत भगवान् के अवतारों की वह रक्षक क्रिया है, जो युग-युग में पशु, मनुष्य, ऋषि तथा देवों में प्रकट होकर प्रकट होते हैं, और जिनके द्वारा वेदों के शत्रुओं का विनाश होता है। (स्कन्ध 12, अध्याय 7, श्लोक 14)



रक्षा, अर्थात् विश्व का रक्षण, भगवान् के अवतारों से पूर्ण होती है, जो युग-युग में पशु, मनुष्य, ऋषि तथा देवों में प्रकट होकर धर्मात्माओं तथा शाश्वत मार्ग की रक्षा करते हैं (श्लोक 14)।

शेष लक्षण इस प्रकार हैं। मन्वन्तर वे महान् काल-खण्ड हैं जिनका अधिष्ठान एक मनु, देवगण, मनु के पुत्र, इन्द्र, सप्त ऋषि तथा भगवान् का एक अंशावतार करते हैं। वंश भूत, वर्तमान तथा भविष्य के राजाओं की परम्परा है, और वंशानुचरित उनके चरितों का सम्बद्ध वृत्तान्त। संस्था चतुर्विध प्रलय है — नैमित्तिक, प्राकृतिक, नित्य तथा आत्यन्तिक। हेतु, सृष्टि का कारण, अविद्या से प्रेरित कर्मों का कर्ता जीव है। और अपाश्रय — दसों में गहनतम — ब्रह्म है, वह परम तत्त्व, जो आत्मा की प्रत्येक अवस्था में — गर्भ से मृत्यु तक — व्याप्त रहता है, फिर भी उनके साक्षी तथा आधार के रूप में सदा भिन्न रहता है। जब मन शान्त हो जाता है, चाहे स्वयं अथवा एकाग्रता से, तब मनुष्य इस आत्मा का साक्षात्कार करता है, तीनों अवस्थाओं को पार कर जाता है, और सांसारिक चेष्टा से निवृत्त हो जाता है।

अठारह पुराण

लक्षण बता चुकने के बाद, सूत स्वयं महापुराणों के नाम लेते हैं — कुल अठारह, इन्हीं लक्षणों से विशिष्ट।

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं लैङ्गं सगारुडं ।

नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कान्दसंज्ञितम् ॥ २३ ॥

भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं सवामनम् ।

वाराहं मात्स्यं कौर्मं च ब्रह्माण्डाख्यमिति त्रिषट् ॥ २४ ॥

*brāhmaṇaṁ pādmaṇ vaiṣṇavaṇ ca śaivaṇ laingāṇ sa-gāruḍaṇ nārādīyaṇ bhāgavatam āgneyaṇ
skānda-saṁjñītam bhaviṣyaṇ brahma-vaivartam mārkaṇḍeyaṇ sa-vāmanam vārāhaṇ
mātsyaṇ kaurmaṇ ca brahmāṇḍākhyam iti tri-ṣaṭ*

अर्थ: अठारह पुराण हैं — ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, लिङ्ग, गारुड़, नारद, भागवत, अग्नि, स्कन्द, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, वामन, वराह, मत्स्य, कूर्म तथा ब्रह्माण्ड। (स्कन्ध 12, अध्याय 7, श्लोक 23-24)



सूत सब अठारह महापुराणों के नाम लेते हैं — जिनमें भागवत भी है — वे पावन इतिहास जो वैदिक सत्य को प्रत्येक युग में ले जाते हैं (श्लोक 23-24)।

इस प्रकार, सूत कहते हैं, बताया गया कि किस प्रकार वेदव्यास ने अपने शिष्यों तथा उनके शिष्यों सहित वेदों तथा पुराणों को विभक्त एवं सुरक्षित किया, ताकि यह पावन ज्ञान जगत् के कल्याण हेतु स्थिर रहे।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. पावन ज्ञान भक्ति से जीवित रहता है। अथर्ववेद तथा पुराणों की दीर्घ परम्पराएँ दिखाती हैं कि शाश्वत शब्द केवल इसलिए बचा रहता है कि श्रद्धालु आत्माएँ उसे ग्रहण करके आगे सौंपती हैं। हम उनकी उसी देखभाल के उत्तराधिकारी हैं (श्लोक 1-7)।
2. सच्चे पुराण के दस लक्षण होते हैं। सृष्टि, पालन, रक्षण, प्रलय, राजवंश, और सबसे बढ़कर परम आश्रय ब्रह्म — ये दस लक्षण एक पुराण को इस प्रकार गढ़ते हैं कि वह जगत् की कथा और उससे परे का मार्ग, दोनों वहन करे (श्लोक 9-10)।
3. भगवान् प्रत्येक युग में रक्षा करते हैं। रक्षा, चौथा लक्षण, युग-युग में धर्मात्माओं की रक्षा हेतु भगवान् का स्वयं अवतरण है — यह स्मरण कि दिव्य रक्षण पावन इतिहास की संरचना में ही बुना हुआ है (श्लोक 14)।
4. सभी मार्ग परम आश्रय तक ले जाते हैं। अपाश्रय, दसवाँ लक्षण, आत्मा की प्रत्येक अवस्था के नीचे विद्यमान ब्रह्म है; एक पुराण केवल इतिहास नहीं, अपितु उस आत्मा की ओर संकेत करता एक मानचित्र है जो हमारा अन्तिम आश्रय है (श्लोक 19-21)।

एक भक्तेपूर्ण चिन्तन

वंशों तथा परिभाषाओं के एक अध्याय को मात्र तकनीकी समझकर छोड़ देना सहज होगा। किन्तु फिर से देखिए, और कुछ कोमल प्रकट होता है। सूत जिस प्रत्येक नाम का उच्चारण करते हैं वह एक ऐसी आत्मा है जिसने इस ज्ञान से इतना प्रेम किया कि उसे वहन किया — जिसने वेद या पुराण का एक अंश कण्ठस्थ करके उसे श्रद्धापूर्वक अपने शिष्य को दिया, ताकि शताब्दियों बाद वह हम तक पहुँच सके। आज जब हम भागवत पढ़ते हैं, तब हम भक्ति की उसी शृंखला के अन्तिम छोर पर हैं। और दस लक्षण दिखाते हैं कि ऋषियों ने इन शास्त्रों को कितनी बुद्धिमत्ता से गढ़ा: एक पुराण केवल यह नहीं बताता कि जगत् कैसे बना, पला और लीन हुआ; वह सदा *अपाश्रय* की ओर, परम आश्रय ब्रह्म की ओर, लौटता है — ताकि हम जिस भी कथा में प्रवेश करें, चुपचाप आत्मा की ओर ले जाए जाएँ। भागवत, अठारह के बीच खड़ा, इस विधान की परम पूर्णता है, क्योंकि उसमें दसों लक्षणों में से प्रत्येक बार-बार भगवान् की शुद्ध भक्ति की ओर मोड़ा गया है। तब इस ग्रन्थ को धारण करना सहस्र ऋषियों के आसुत प्रेम को धारण करना है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, इस अध्याय द्वारा वर्णित भक्ति की उस दीर्घ शृंखला में अपने स्थान का अनुभव करने के लिए ठहरिए। शास्त्र का कोई श्लोक पढ़ने या सुनने से पहले, ऋषियों की उस अटूट परम्परा को मौन धन्यवाद दीजिए — वेदव्यास से सूत तक और आपके अपने गुरुओं तक — जिनके माध्यम से यह ज्ञान आप तक पहुँचा है। फिर भागवत के एक अंश को भी धीरे-धीरे पढ़िए, यह स्मरण करते हुए कि उसकी प्रत्येक कथा आपको *अपाश्रय*, परम आश्रय, की ओर ले जाने के लिए है। अन्त में “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का एक निश्चित संख्या में जप कीजिए, पावन शब्द के प्रति अपनी कृतज्ञता तथा उसे अपने हृदय में जीवित रखने के अपने संकल्प को अर्पित करते हुए। इसमें आप, अपने छोटे-से रूप में, उस शृंखला की एक और श्रृंखला कड़ी बन जाते हैं।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का सप्तम अध्याय यह कथा पूर्ण करता है कि शाश्वत ज्ञान किस प्रकार सुरक्षित रखा गया और आगे बढ़ाया गया। सूत गोस्वामी अथर्ववेद की शाखाओं को उसके अनेक शिष्यों के माध्यम से रेखांकित करते हैं, उन छह ऋषियों के नाम लेते हैं जिन्होंने पुराणों को वहन किया — एक परम्परा जिसमें वे स्वयं खड़े हैं — और उन दस लक्षणों को उघाड़ते हैं जिनसे एक सच्चा पुराण जाना जाता है: विश्व की सृष्टि से लेकर ब्रह्म तक, सबके नीचे स्थित परम आश्रय। वे अठारह महापुराणों के नाम लेकर समापन करते हैं, जिनमें भागवत भी है। अपनी सूचियों तथा परिभाषाओं के नीचे, यह अध्याय एक शान्त एवं मार्मिक सन्देश वहन करता है: कि गहनतम सत्य हम तक केवल उन्हीं की भक्ति से पहुँचते हैं जिन्होंने उन्हें संजोया और सुरक्षित रखा, और यह कि प्रत्येक सच्चा पुराण, उसका विषय चाहे कितना ही विशाल हो, अन्ततः आत्मा की ओर लौटता एक मार्ग है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, सप्तम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-7-atharvaveda-shakhaen-puranon-ke-lakshan-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

